

गुरुमाई चिद्विलासानन्द द्वारा लिखित पुस्तक

अन्तर-शुद्धि के सोपान

उद्धरण २१

तुम्हारा सुख और तुम्हारा दुःख, तुम्हारा सौभाग्य और तुम्हारा दुर्भाग्य, तुम्हारा धैर्य और तुम्हारा अधैर्य, यह सब कुछ तुम्हारे अपने विचारों और भावनाओं के ऊपर निर्भर है। नियन्त्रण तुम्हारे हाथ में है। तुम्हें यह अधिकार है कि तुम अपने विचारों पर संयम रखो या उन्हें निरंकुश दौड़ने दो।



© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

गुरुमाई चिद्विलासानन्द, अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्गुणों का योग अध्याय ७ “करुणा,” से उद्धृत [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ. १०६।